विद्या- -भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी , वर्ग-पंचम, विषय-हिंदी,

दिनांक-06-09-2021 एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

पाठ-11 एक सफल उड़ान

सुप्रभात बच्चों,

दिल्ली में पहला साक्षात्कार देने के बाद रा साक्षात्कार देने के लिए मैं देहरादून गया वहाँ वायुसेना में नौकरी के लिए साक्षात्कार । साक्षात्कार के समय यहाँ बुद्धि के बजाय रीरिक योग्यता पर ज्यादा जोर दिया गया। क्षात्कार के अनुभव ने मन को निराशा से भर या था। अतः बिना समय व्यर्थ किए मैं तुरंत ापस हो लिया।

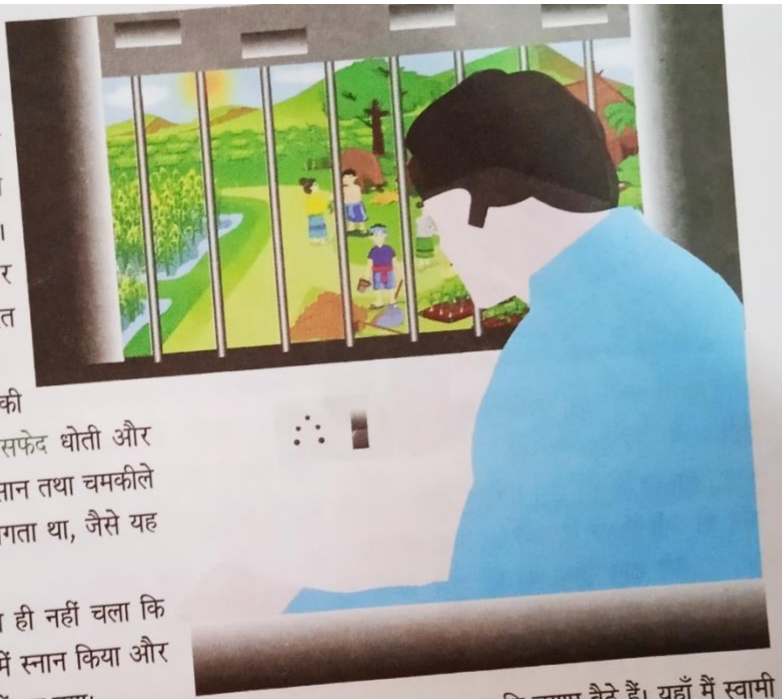

रेलगाड़ी में बैठकर रेल के डिब्बे की खिड़की से मैंने देश का देहाती रूप देखा। सफेद धोती और पगड़ी पहने धान के खेतों में काम करते किसान तथा चमकीले रंग बिखेरती महिलाओं को देखकर ऐसा लगता था, जैसे यह कोई सुंदर चित्र हो।

यात्रा का आनंद लेने में मुझे पता ही नहीं चला कि कब मैं ऋषिकेश आ गया। यहाँ मैंने गंगा में स्नान किया और छोटी-सी पहाड़ी पर बने शिवानंद आश्रम में आ गया।

आश्रम में प्रवेश करते ही मुझे तीव्र कंपन-सा महसूस हुआ। मैंने देखा, चारों ओर साधु समाधि लगाए बैठे हैं। यहाँ मैं स्वामी शिवानंद से मिला। वे बिल्कुल भगवान बुद्ध की तरह दिख रहे थे। मैं उनकी मोहक, एकदम बच्चे जैसी मुस्कान और कृपालु भाव देखकर दंग रह गया।

मैंने स्वामी जी को अपना परिचय दिया। उन्होंने मेरे बिना कुछ बताए मेरी उदासी का कारण पूछा। मैंने उन्हें भारती वायुसेना में नहीं चुने जा सकने की असफलता के बारे में बताया। उन्होंने मुस्कराते हुए धीमे और गंभीर स्वर में कहा, "जो इच्छा तुम्हारे हृदय में पैदा होती है, और यदि वह शुद्ध मन से की गई हो तो उसमें विद्युत् शक्ति होती है। वह शक्ति हर रात आकाश में चली जाती है, हर सुबह ईश्वरीय शक्ति लिए वापस शरीर में प्रवेश करती है। जो सोचा गया है, वह धीरे-धीरे सच होता नजर आता है। नौजवान! इस तथ्य पर तुम उतना ही भरोसा कर सकते हो जितना अगले दिन होने वाले सूर्योदय पर। तुम अपनी नियति को स्वीकार करो। नियति तुम्हें जो बनाना चाहती है, वह पहले ही तय कर चुकी है। तुम अपने सही उद्देश्य की तलाश करो और सब ईश्वर की इच्छा पर छोड़ दो।"

गृहकार्य-

दिए, गए कहानी पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें।